~~April~~ 88 — कर्मकारक 5

नी, वह् धात्वोर्न: आणि-कर्ता स णौ कर्म न स्यात् । नाययति वाहयति वा भारं भृत्येन देवदत्त: ॥

नी और वह धातु का जो णिच् से पूर्व का कर्ता वह णिच् में कर्म नहीं होता। नी और वह धातु गत्यर्थक हैं, अत: 'गति बुद्धि' इत्यादि सूत्र से प्राप्त कर्म-संज्ञा का यह निषेध करता है। फलत: 'नाययति' इत्यादि उदाहरणों में 'भृत्येन', इसमें 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' से अनुक्त कर्ता में तृतीया होती है। भृत्य: भारं नयति वहति वा तं (भृत्यं) देवदत्त: प्रेरयति इति देवदत्त: भृत्येन भारं नाययति वाहयति वा।

नियन्तृ कर्तृकस्य वहेरनिषेध: (वा॰)

वाहयति रथं वाहान् सूत: ॥

नियंता (सारथि) जिसका कर्ता है उस वह धातु के योग में 'नीवह्योर्न' यह निषेध नहीं लगता है। अत: 'वाहान' यह कर्म-संज्ञा-मूलक द्वितीया होती है, अन्यथा 'वाहै:' यह अनिष्ट तृतीया होती है।

आदिखाद्योर्न (वा॰)

आदि और खादि धातुओं का णि से पूर्व का जो कर्ता वह, णि में कर्म ... है। प्रत्यवसानार्थक होने से 'गतिबुद्धि'

इत्यादि से प्राप्त कर्मसंज्ञा का निषेध करता है।" बटुः अन्नम् अत्ति खादति वा, गुरुः तं प्रेरयति इति गुरुः बटुना अन्नम् आदयति खादयति वा।"

भक्षेरहिंसार्थस्य न (वा०)

भक्षयत्यन्नं बटुना अहिंसार्थस्य किम्? भक्षयति बलीवर्दान् सस्यं कृषाणः।

अहिंसार्थक भक्ष् धातु के योग में 'गतिबुद्धि' से प्राप्त संज्ञा नहीं होती। बटुरन्नं भक्षयति, गुरुः तं प्रेरयति इति गुरुः बटुना अन्नं भक्षयति। यहाँ 'बटुना' इस अनुक्त कर्ता में तृतीया होती है, क्योंकि णिच् से पूर्व भक्ष् धातु का कर्ता बटु णिजन्त भक्षि धातु से साक्षात् संबद्ध न रहने के कारण अनुक्त हो जाता है, उसकी 'गतिबुद्धि' से प्राप्त कर्मसंज्ञा का इस वार्तिक से निषेध हो जाने से उसमें द्वितीया नहीं होती, तब 'कर्तृकरणयोस्तृतीया' इस सूत्र से अनुक्त कर्ता में तृतीया होती है।

~~अहिंसार्थक~~ अहिंसार्थस्य किम्? ग्रन्थकार प्रश्न करता है कि वार्तिक में अहिंसार्थ पद का ग्रहण क्यों किया? उत्तर देता है। भक्षयति बलीवर्दान् सस्यं कृषाणः, यहाँ 'बलीवर्दान्' इस शब्द में 'गति बुद्धि' से कर्मसंज्ञा हो जाने के कारण द्वितीया होती है। इस कर्मसंज्ञा का 'भक्षेरहिंसार्थस्य न' इस वार्तिक से निषेध नहीं होता। क्योंकि बैल सस्य भक्षण कर उसको बरबाद कर देते हैं। यहाँ हिंसा का अर्थ हानि पहुँचाना है।

अतः भक्षिधातु यहाँ अहिंसार्थक नहीं है। यदि वार्तिक में अहिंसार्थक शब्द का ग्रहण नहीं किया जायेगा तो यहाँ हिंसार्थक भक्ष धातु के योग में भी कर्म संज्ञा का निषेध होजायेगा, और तब बलीवर्दः ऐसा अनिष्ट प्रयोग होगा।

जल्पतिप्रभृतीनामुपसंख्यानम् (वा०)

भाषयति, जल्पयति वा धर्मं पुत्रं देवदत्तः।

गतिबुद्धि से विधीयमान कर्मसंज्ञा में जल्प आदि धातुओं का भी उपसंख्यान है। पुत्रो धर्मं भाषते जल्पति वा, तं (पुत्रम्) देवदत्तः प्रेरयति इति देवदत्तः पुत्रं भाषयति जल्पयति वा। इसमें भाष और जल्प धातु का णिच् से पूर्व का कर्ता पुत्र कर्मसंज्ञक होता है, अतः उसमें द्वितीया होजाती है। एवमेव शिष्यम् आचार्यः सत्यं भाषयति। अधिकारी तस्करं तथ्यं स्वीकारयति।

दृशेश्च (वा०)

दर्शयति हरिं भक्तान् (गुरुः)

दृश् धातोरपि णौ कर्ता स णौ कर्म स्यात्। दृश् धातु का णिच् से पूर्व का जो कर्ता वह णिजन्त अवस्था में कर्मसंज्ञक है। भक्ता हरिं पश्यन्ति, तान् गुरुः प्रेरयति इति गुरुः भक्तान् हरिं दर्शयति। यहाँ भक्त की कर्मसंज्ञा होजाती है, क्योंकि वह अणिजन्त अवस्था का कर्ता है। अतएव कर्म में द्वितीया होती है।

पिता बोधयति पुत्रान् आचारं कुल लोकयोः॥ भोजयति माता शिशुम् [illegible]

पर्वासरे ।

प्रयोगमतं देरास्य प्रतिकुल परिस्थिति.

शब्दायतेर्न (वा०)

शब्दायमति देवदत्तेन । धात्वर्थसंगृहीत कर्मत्वेनाऽकर्मकत्वात् प्राप्तिः । येषां देशकालादिभिन्नं कर्म न संभवति तेऽत्राऽकर्मकाः न त्वविवक्षितकर्माणोऽपि । तेन मासमासयति देवदत्तमित्यादौ कर्मत्वं भवत्येव, देवदत्तेन पाचयतीत्यादौ तु न ॥

शब्दाय इस धातु के प्रयोग में 'गति बुद्धि' से कर्मसंज्ञा नहीं होती । यह कर्म-संज्ञा 'शब्द करना' इस धात्वर्थ से कर्म का संग्रह हो जाने के कारण शब्दायमति क्रिया की अकर्मकता होने से प्राप्ति थी । किन्तु शब्दायमति देवदत्तेन, इसमें देवदत्त की कर्म संज्ञा का निषेध हो जाने से उसमें तृतीया होती है। अतः स्वाभाविक रूप से अनुक्त-कर्ता में । कर्तृकरणयोः से तृतीया होती है

हृक्रोरन्यतरस्याम्

हृक्रोरणौ यः कर्ता स णौ कर्म स्यात् । हारयति कारयति वा भृत्यं भृत्येन वा कटं (स्वामी)

हृ और कृ धातु का णिच् से पूर्व का जो कर्ता वह णिजन्त अवस्था में विकल्प से कर्म संज्ञक हो ।

अत: 'हारयति, कारयति' इत्यादि वाक्यों में
अण्यन्त अवस्था का कर्ता भृत्य विकल्प
के अभाव-पक्ष में अनुक्त कर्ता में
'ह्रक्रोरन्यतरस्याम्' से 'भृत्येन' यह तृतीया भी
होती है। इसी प्रकार हारयति भारं भृत्यं
भृत्येन वा भ्राता में प्रकृति। कारयति
कर्मकरं कर्मकरेण वा क्षीरं-कटम्।
इन वाक्यों में कर्म-संज्ञा-पक्ष में द्वितीया
तथा अभावपक्ष में पूर्ववत् तृतीया होगी।
अण्यन्त अवस्था का कर्म ण्यन्त में भी
कर्म ही रहता है। एवमेव

नीतकारणा नीतं एवं कारायि व्यवसो
द्युतम्। अहारयत् स्वसैरेषां मैत्री
इसेन नैषधम् ॥

अभिवादिदृशोरात्मनेपदे वेति
वाच्यम् (वा॰)

अभिवादयते, दर्शयते देवं
भक्तं भक्तेन वा (गुरुः)

अभि-वादि धातु तथा दृश्
धातु के आत्मनेपद — प्रयोग में
अण्यन्त अवस्था का कर्म ण्यन्त
अवस्था में विकल्प से कर्मसंज्ञक
होता है। अत: उपर्युक्त वाक्य में कर्म-
संज्ञा पक्ष में 'भक्तम्' यह द्वितीया
तथा कर्मसंज्ञा के अभाव पक्ष में
'भक्तेन' यह तृतीया प्रयुक्त होती है।

भक्तो देवम् अभिवादयते तं गुरुः
प्रेरयति इति गुरुः देव भक्तं भक्तेन
वा अभिवादयते। यहाँ अभिवादि इस
ण्यंत धातु से णिच् प्रत्यय होता है।